Dr. Priti Rayan
H.D. Jain College (Ara)
B.A Part - III
Paper - VII
Topic - Japan mein Samrajyavad
Ke Uday Ka Karan

जापान में साम्राज्यवाद के उदय के कारणों का वर्णन करें।

1870-94 तक जापान आधुनिकीकरण निश्चित स्तर को पूरा कर चुका था। पिछले 25 सालों में जापान के अंदर कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए थे, दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय राजनीति में पश्चिमी देशों का खतरा भी जापान के ऊपर बढ़ता जा रहा था। अभी तक यूरोपीय राष्ट्र जापान को बहुत ही पिछड़ा और कमजोर राष्ट्र समझ रहे थे इसलिए बिना किसी डर के वह जापान का सहयोग कर रहे थे लेकिन जापान की बढ़ती शक्ति को देखकर अब वे जापान की सहायता किसी प्रकार से नहीं करना चाहते थे।

अतः राष्ट्र के अंदर और बाहर सभी स्थितियों को समझते हुए जापान के साम्राज्यवादी जीवन की ओर आगे बढ़ने का निर्णय लिया। इसके प्रमुख कारण निम्न हैं:-

संसद और संविधान की स्थापना :-

संसद और संविधान की स्थापना ने राजा की शक्तियों को चुनौती देना शुरू कर दिया। जनता अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से अपनी माँगे सरकार के सामने स्पष्ट करने लगी। आए दिन संसद और ~~ज~~ राजा के बीच संघर्ष की घटनाएं बढ़ने लगीं। शक्ति प्रदर्शन की माँग को लेकर जापान के कई प्रांतों में सरकार विरोधी आंदोलन होने लगे। अतः जापान की इच्छा और राष्ट्र की महत्वकांक्षा को पूरा करने के लिए जापान साम्राज्यवाद की ओर आगे बढ़ा।

बढ़ती राष्ट्रीयता की भावना :-

बढ़ती राष्ट्रीयता की भावना ने ~~ज~~ जापान को साम्राज्यवादी देश बनने को विवश किया। इस समय पूरी दुनिया में साम्राज्यवाद ही संसाधन और शक्ति दोनों का स्रोत था। अतः इस रास्ते पर चलकर जापान भी अपनी सम्प्रभुता हासिल कर सकता था। जापानी जनता असमान संधियों को तोड़ने और आत्मनिर्णय का अधिकार चाहती थी अतः सरकार इस बढ़ती राष्ट्रीयता की भावना को आकार देने के लिए साम्राज्यवाद की ओर आगे बढ़ी।

जापान की सुरक्षा तथा पश्चिमी देशों से टक्कर

जापानी सुरक्षा और पश्चिमी देशों से टक्कर भी जापान को साम्राज्यवाद की ओर बढ़ने का कारण बना था। जिस स्थिति में जापान ने अपना दरवाजा पश्चिमी देशों के लिए खोला तो उनके द्वारा जापानी को दबाव करनी थी। इस प्रक्रिया के कारण 25-25 सालों के कठिन मेहनत से जापान ने अपने आप को आधुनिक देश बनाया। अतः जापान अब इस मेहनत का परिणाम चाहता था। इसके लिए जरूरी था कि वह साम्राज्यवाद की नीति अपनाए और साम्राज्यवाद के लिए सैनिक तथा सुरक्षा की जरूरत थी। अतः जापान ने अपनी ताकत अनुसार सैन्य क्षेत्र में किया जिससे वह सुरक्षा और साम्राज्यवाद दोनों को पाने के लिए इस्तेमाल कर सके।

बढ़ती जनसंख्या :

बढ़ती आबादी को बसाने की समस्या ने भी जापान को साम्राज्यवादी जीवन के लिए प्रेरित किया। पिछले 25 सालों में जापान में औद्योगिक प्रगति के साथ साथ जनसंख्या भी काफी बढ़ गई थी। बढ़ी हुई जनसंख्या को उद्योग में काम तो मिला लेकिन उन्हें रहने एवं जीवन यापन के अन्य कार्यों के लिए क्षेत्र जरूरत थी, जिसकी कमी जापान में शुरू से ही थी। अतः जापान ने अपने आस-पास के सभी सीमावर्ती देशों में घुसपैठ करना शुरू कर दिया और यहीं से इसके साम्राज्यवादी जीवन की शुरुआत हुई।

औद्योगिक राष्ट्र बनने की प्रक्रिया :

औद्योगिक राष्ट्र बनने की प्रक्रिया में भी जापान को साम्राज्य के लिए अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित किया था। इंग्लैण्ड सहित पूरे यूरोप में औद्योगिकरण अपने विकास की अवस्था में था। अतः जापान को यूरोपीय देशों से टक्कर लेने के लिए उनकी तरह औद्योगिक देश बनना जरूरी था ताकि वह सैन्य शक्ति के साथ उत्पादन और मशीन की शक्ति से अपना प्रभाव स्थापित कर सके। जापान ने 1890 के बाद औद्योगिक वस्तुओं के उत्पादन पर विशेष जोर दिया। जिससे वह उन कमजोर देशों में बेचकर अपना साम्राज्य स्थापित कर सके जिनमें यूरोपीय देशों की भी दिलचस्पी हो।

समानता की इच्छा :-

समानता की इच्छा ने भी जापानीयों को साम्राज्यवादी भावना की ओर बढ़ाया। विदेशीयों के लिए अपना दरवाजा खोलने के समय से लेकर आधुनिकीकरण की प्रक्रिया तक जापान को अनेक असमान्य तथा अपमानजनक संधियां यूरोपीय देशों के दबाव मे करनी पड़ी थी, उनके मन मे प्रतिशोध की एक भावना बहुत पहले से जल रही थी अतः शक्ति तथा संसाधन दोनों प्राप्त कर लेने के बाद जापनीयों की इच्छा यूरोपीय देशों के समान स्तर प्राप्त करने की हुई। जिसने उसे साम्राज्यवाद की ओर आगे बढ़ने तथा समानता को प्राप्त करने को प्रेरित किया।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त सभी स्थितियों ने जापान को एक आधुनिक राष्ट्र बनाने के साथ-2 एक महत्वकांक्षी राष्ट्र भी बना दिया। जापान की महत्वकांक्षा ऐशिया के सबसे शक्तिशाली तथा यूरोप के प्रभावशाली देशों की पंक्ति में शामिल होने की थी। अपनी इस इच्छा मे शामिल होने की थी। अपनी इस ~~इसे~~ इच्छा को पूरा करने के लिए जापान आत्मनिर्भरता सुरक्षा भय इन सभी के बीच से गुजरता हुआ 1894 में साम्राज्यवादी जीवन की शुरुआत की।